प्रेस विज्ञप्ति

राज भवन, राँची

दिनांक : 20 मार्च, 2025 :-

(1) माननीय राज्यपाल ने 'भारत में तसर रेशम उद्योग के समावेशी विकास' संगोष्ठी को संबोधित किया।

माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार), राँची एवं जैव-विविधता बोर्ड एवं वन विभाग, झारखण्ड द्वारा आज केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची में 'भारत में तसर रेशम उद्योग के समावेशी विकास' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि तसर रेशम उद्योग न केवल एक कृषि आधारित उद्योग है, बल्कि यह जनजातीय समुदाय की परंपरा और संस्कृति का भी अभिन्न हिस्सा है। झारखंड इस उद्योग में देश का अग्रणी राज्य है और बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों की आजीविका इससे जुड़ी हुई है। उन्होंने तसर रेशम उद्योग को पर्यावरण-संवेदनशील एवं सतत विकास का उदाहरण बताते हुए कहा कि इससे न केवल ग्रामीण

अर्थव्यवस्था को बल मिलता है, बल्कि वन संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि तसर रेशम उत्पादन से लगभग 10 मिलियन लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं और भारत सरकार द्वारा केंद्रीय रेशम बोर्ड एवं कपड़ा मंत्रालय के माध्यम से विभिन्न योजनाओं को लागू किया जा रहा है, जिससे इस क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा मिल रहा है। राज्यपाल ने अपने पूर्व के अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्हें माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार में मई 2014 में केंद्रीय वस्त्र राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। इस दौरान, उन्होंने रेशम कृषकों और बुनकरों के कल्याण हेतु किए जा रहे प्रयासों को निकटता से देखा और उनकी आय बढ़ाने के लिए हरसंभव प्रयास किए। उन्होंने कहा कि झारखंड के तसर उत्पादकों को आगे बढ़ाने और उनकी आजीविका को स्थायी बनाने के लिए नीति-निर्माण में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि वैश्विक बाजार में तसर रेशम की मांग लगातार बढ़ रही है और हमें इस अवसर का लाभ उठाते हुए भारतीय तसर रेशम को एक विशेष पहचान दिलानी होगी। इसके लिए ब्रांडिंग, गुणवत्ता नियंत्रण, निर्यात संवर्धन एवं तकनीकी उन्नति पर विशेष

ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने इस क्षेत्र में अनुसंधान एवं नवाचार को और अधिक बढ़ावा देने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि झारखंड के सारंडा जंगल को अक्सर 'भारत की तसर राजधानी' कहा जाता है और यह माना जाता है कि तसर की उत्पत्ति यहीं हुई थी। इस क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाने के लिए अनुसंधान एवं विकास (R&D) को प्राथमिकता देनी होगी।

माननीय राज्यपाल ने वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं से आह्वान किया कि वे तसर रेशम के उप-उत्पादों एवं उत्पाद विविधीकरण पर विशेष ध्यान दें, जिससे स्थानीय कारीगरों एवं बुनकरों की आय में वृद्धि हो सके।

इस अवसर पर उन्होंने तसर उत्पादों एवं उनके प्रसंस्करण प्रक्रियाओं का अवलोकन किया। राज्यपाल महोदय द्वारा एक पुस्तक/शोध पत्र का विमोचन भी किया गया। साथ ही, इस क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया गया।

(2) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार से आज भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों ने राज भवन में शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर राज्यपाल महोदय ने अधिकारियों से संवाद करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति सदैव समर्पित रहने का संदेश दिया।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि 15 नवंबर, 2000 को झारखंड राज्य का सृजन हुआ, लेकिन लेकिन राज्य के विकास हेतु बहुत कार्य करने होंगे। उन्होंने अधिकारियों को राज्य की जनजातीय आबादी के उत्थान के प्रति विशेष संवेदनशीलता और समर्पण के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। माननीय राज्यपाल से प्रशिक्षु अधिकारियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए झारखंड में प्रशिक्षण के दौरान मिले अवसरों और सीख पर चर्चा की।

(3) माननीय राज्यपाल-सह-झारखंड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति श्री संतोष कुमार गंगवार से आज सिदो कान्हु मुर्मु विश्वविद्यालय, दुमका के प्रभारी कुलपति प्रो० बिमल प्रसाद सिंह ने राज भवन में भेंट की तथा विश्वविद्यालय की अद्यतन शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों की जानकारी प्रदान की।

राज्यपाल महोदय ने विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु व्यापक प्रयास करने हेतु कहा। उनके द्वारा विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ कराने, एकेडमिक कैलेंडर का पालन सुनिश्चित करने एवं सत्र को नियमितीकरण हेतु निदेश दिया गया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में ऐसा शैक्षणिक वातावरण विकसित किया जाए, जो ज्ञान, नवाचार एवं शोध को प्रोत्साहित करे, जिससे विद्यार्थी न केवल अपने विषयों में दक्ष बनें, बल्कि समाज एवं राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान दें।

(4) माननीय राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार को आदिवासी भूमिज मुंडा चुआड़ सेना (झारखंड प्रदेश) द्वारा एक ज्ञापन प्राप्त हुआ, जिसमें झारखंड विधानसभा सभा कक्ष में रघुनाथ महतो का चित्र लगाने के विरुद्ध आपत्ति दर्ज की गई है।

ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि 10 मार्च, 2025 को श्री अमित महतो, विधायक, झारखंड विधानसभा ने विधानसभा परिसर में रघुनाथ महतो का चित्र लगाने की माँग की तथा इस संबंध में पत्र संख्या 94/2025, दिनांक 10.03.2025 के माध्यम से झारखंड विधानसभा के प्राधिकरण को पत्र भी प्रस्तुत किया। ज्ञापन में कहा गया है कि रघुनाथ महतो को चुआड़ आंदोलन का नेता मानने का कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है और यह विषय पूर्णतः काल्पनिक है। भूमिज आंदोलन को ही चुआड़ आंदोलन के रूप में जाना जाता है और इस संदर्भ में कई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं। साथ ही, रघुनाथ महतो को चुआड़ आंदोलन का नेता घोषित करने की सत्यता को चुनौती देते हुए नागरिक न्यायालय, रांची में एक मामला (Suit/503/2024) लंबित है।

ज्ञापन के माध्यम से राज्यपाल महोदय से आग्रह किया गया है कि झारखंड विधानसभा के अध्यक्ष को यह निदेश दिया जाए कि जब तक न्यायालय का अंतिम निर्णय नहीं आ जाता, तब तक इस विषय को लंबित रखा जाए।